



## 9

## पतंजलि योग सूत्र के विभूति पद और कैवल्य पद का स्मृतिकरण

पतंजलि योग सूत्र महर्षि पतंजलि द्वारा लिखा गया है। इसके 196 सूत्र हैं जिन्हें चार अध्याय में बांटा गया है। यह चार अध्याय हैं—समाधि पद, साधना पद, विभूति पद और कैवल्य पद। समाधि पद योग क्या है, इसकी विवेचना करता है। साधना पद आपको योग स्थिति में आने में सहायता करता है। विभूति पद आपको पीडा एवं दर्द से मुक्ति की ओर ले जाता है। यही मुक्ति ही योग के अभ्यास का अंतिम लक्ष्य है। योग सूत्र आपको योग के प्रायोगिक महत्व पर बल देता है। सूत्र का अर्थ 'धागा' होता है। पतंजलि योगसूत्र ज्ञान को आपस में जोड़ता है। योगसूत्र सरल व साधारण शब्दों से धागे-धागे पिरोकर ज्ञान देते हैं। सूत्र सरल एवं आसानी से याद हो जाते हैं। सूत्र सरल एवं आसानी से याद हो जाते हैं। यौगिक नियमों को याद करने से सूत्र समझकर आगे अभ्यास में आसानी होती है। योग अभ्यास कर्मा मंत्रोच्चारण करने से योग से अच्छा ध्यान लगा सकता है।



टिप्पणी



उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- विभूति पद के सूत्रों को याद कर पाएंगे।
- कैवल्य पद के सूत्रों का अर्थ बता पाएंगे।
- विभूति पद कैवल्य पद के सूत्रों की व्याख्या कर पाएंगे।

### 9.1 विभूति पद

तृतीयोऽध्यायः ॥ ॥ विभूति-पादः ॥

तृतीय अध्याय । विभूति पद

I № 1

देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ॥ ३ ॥१ ॥

vFkZ

धारणा का अर्थ है मस्तिष्क को किसी विशेष वस्तु की ओर ध्यानकर्षित करना ।

I № 2

तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ॥ ३ ॥२ ॥

vFkZ

किसी वस्तु के प्रति जटिल ज्ञान का प्रवाह ध्यान है ।



टिप्पणी

I ॥ 3

तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः ॥ ३ ॥३ ॥

vFkZ

जब भी आप किसी रूप में अर्थ स्पष्ट करते हैं, वह समाधि कहलाता है।

I ॥ 4

त्रयमेकत्र संयमः ॥ ३ ॥४ ॥

vFkZ

यह तीन वस्तुओं को जब अभ्यास करते हैं, तब समयाय कहलाती है।

I ॥ 5

तज्जयात्प्रज्ञालोकः ॥ ३ ॥५ ॥

vFkZ

इन सभी पर विजय से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

I ॥ 6

तस्य भूमिषु विनियोगः ॥ ३ ॥६ ॥

vFkZ

यह विभिन्न स्तरों पर कार्य करती है। यह आपको बताती है कि आपको ज्यादा तेज नहीं चलना है।



टिप्पणी

पतंजलि योग सूत्र के विभूति पद और कैवल्य पद का स्मृतिकरण

I ७ 7

त्रयमन्तरङ्गं पूर्वैभ्यः ॥ ३ ॥७ ॥

vFkZ

यह तीन अर्थों में आपके करीब होता है।

I ७ 8

तदपि बहिरङ्गं निर्बीजस्य ॥ ३ ॥८ ॥

vFkZ

यह समाधि के लिए बाध्य रूप से सहायक है।

I ७ 9

व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौ निरोधक्षणचित्तान्वयो  
निरोधपरिणामः ॥ ३ ॥९ ॥

vFkZ

व्यवधान उत्पन्न करने वाले परिवर्तनों का दमन आवश्यक है। नियंत्रण स्थापित होने पर मस्तिष्क की शक्ति भी नियंत्रित हो जाती है।

I ७ 10

तस्य प्रशान्तवाहिता संस्कारात् ॥ ३ ॥१० ॥

vFkZ %

यह अविरल प्रभाव स्थायी आदत बन जाता है।

I ॥ 11

सर्वार्थतैकाग्रतयोः क्षयोदयौ चित्तस्य समाधिपरिणामः ॥ ३ ॥११ ॥

√FKZ %

सभी वस्तुओं का ध्यान रखते हुए एक वस्तु पर एकाग्रता लगायी जाती है। यह दो शक्तियां समाप्त होकर चित शांत होता है। इसे ही समाधि कहते हैं।

I ॥ 12

ततः पुनः शान्तोदितौ तुल्यप्रत्ययौ चित्तस्यैकाग्रतापरिणामः ॥ ३ ॥१२ ॥

√FKZ %

चित्त एक बिन्दुमय हो जाता है। जिसमें वर्तमान व भूत दोनों शामिल होते हैं।

I ॥ 13

एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणामा व्याख्याताः ॥ ३ ॥१३ ॥

√FKZ %

इस सूत्र में तृतीय सूत्र में परिवर्तन किस गए है। यह समय एवं स्थिति के साथ पूरे अंगों में लाभपद्र है।

I ॥ 14

शान्तोदिताव्यपदेश्यधर्मानुपाती धर्मी ॥ ३ ॥१४ ॥

√FKZ %

यह परिवर्तन इतिहास एवं वर्तमान के अनुसार कार्य करती है। यह आपको ऊर्जावान एवं योग्य बनाती है।



टिप्पणी



I № 15

क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः ॥ ३ ॥१५ ॥

√Fkz %

अनेक प्रक्रियाओं व परिवर्तनों से जुड़कर उदभव हुआ है।

I № 16

परिणामत्रयसंयमाद् अतीतानागतज्ञानम् ॥ ३ ॥१६ ॥

√Fkz %

तीन प्रकार के परिवर्तनों के साथ संयम रखने से व्यक्ति को भूत एवं भविष्य की जानकारी प्राप्त होती है।

I № 17

शब्दार्थप्रत्ययानामितरेतराध्यासात्  
सघरस्तत्प्रविभागसंयमात्सर्वभूतरुतज्ञानम् ॥ ३ ॥१७ ॥

√Fkz %

संयम शब्द का अर्थ व ज्ञान को आपस में परिभाषित किया जाता है। यहीं पर ध्वनि ज्ञान प्राप्त होता है।

I № 18

संस्कारसाक्षात्करणात्पूर्वजातिज्ञानम् ॥ ३ ॥१८ ॥

√Fkz %

पूर्व जीवन के प्रभाव को प्रत्यक्षीकरण करना ज्ञान है।

I № 19

प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम् ॥ ३ ॥१९ ॥

√Fkz %

संयम वह चिन्ह होते हैं जिनसे मस्तिष्क में ज्ञान प्राप्त होता है।

I № 20

न च तत्सालम्बनं तस्याविषयीभूतत्वात् ॥ ३ ॥२० ॥

√Fkz %

यह तत्त्व ही नहीं बल्कि संयम के लिए आवश्यक है।

I № 21

कारुरूपसंयमात्तद्वाह्यशक्तिस्तम्भे चक्षुःप्रकाशासंप्रयोगेऽन्तर्धानम् ॥ ३ ॥२१ ॥

√Fkz %

संयम को शरीर के किसी स्वरूप में लाकर आप ध्यान कर सकते हैं। व्यवधान उत्पन्न होने से वह योगी निराकार हो जाता है तथा उसके पहचानना मुश्किल हो जाता है।

I № 22

सोपक्रमं निरुपक्रमं च कर्मतत्संयमादपरान्तज्ञानमरिष्टेभ्यो वा ॥ ३ ॥२२ ॥

√Fkz %

यह निराकार भावना को वर्णित करते हुए योगी को एक भाव में पिरोता है।



टिप्पणी



I № 23

मैत्र्यादिषु बलानि ॥ ३ ॥२३ ॥

√FkZ %

संयम रखने से अनेक शक्तियां व सिद्धि प्राप्त होती हैं।

I № 24

बलेषु हस्तिबलादीनि ॥ ३ ॥२४ ॥

√FkZ %

हाथी की शक्ति के समान संयम रखने से योगी में शक्ति आती है।

I № 25

प्रवृत्त्यालोकन्यासात्सूक्ष्मव्यवहितविप्रकघष्टज्ञानम् ॥ ३ ॥२५ ॥

√FkZ %

संयम से दिव्य ऊर्जा प्राप्त होती है जो हर व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम है।

I № 26

भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात् ॥ ३ ॥२६ ॥

√FkZ %

सूर्य की भांति संयम रखने से जगत ज्ञान प्राप्त होता है।



I № 27

चन्द्रे ताराव्यूहज्ञानम् ॥ ३ ॥२७ ॥

√Fkz %

चंद्रमा का अर्थ सितारों से जुड़ा हुआ ज्ञान है।

I № 28

ध्रुवे तद्गतिज्ञानम् ॥ ३ ॥२८ ॥

√Fkz %

ध्रुव तारा आपको तारों की भावनाओं का ज्ञान देता है।

I № 29

नाभिचक्रे कायव्यूहज्ञानम् ॥ ३ ॥२९ ॥

√Fkz %

नाभि चक्र के आधार पर शरीर की संरचना का ज्ञान होता है।

I № 30

कण्ठकूपे क्षुत्पिपासानिवृत्तिः ॥ ३ ॥३० ॥

√Fkz %

गले पर ध्यान देने से भूख नियंत्रित होती है।



टिप्पणी



I № 31

कूर्मनाड्यां स्थैर्यम् ॥ ३ ॥३१ ॥

√Fkz %

कुर्मा नाम की ... से शरीर की स्थिति का बोध होता है।

I № 32

मूर्धज्योतिषि सिद्धदर्शनम् ॥ ३ ॥३२ ॥

√Fkz %

सिर से निकलने वाली ऊर्जा आपनी सिद्धियों को जागृत करती है।

I № 33

प्रातिभाद्वा सर्वम् ॥ ३ ॥३३ ॥

√Fkz %

सभी प्रतिमा की शक्ति ज्ञान में निहित है।

I № 34

हृदये चित्तसंवित् ॥ ३ ॥३४ ॥

√Fkz %

हृदय से सही मस्तिष्क का ज्ञान होता है।

I № 35

सत्त्वपुरुषयोरत्यन्तासंकीर्णयोः प्रत्ययाविशेषो  
भोगःपरार्थत्वात्स्वार्थसंयमात्पुरुषज्ञानम् ॥ ३ ॥३५ ॥

√Fkz %

आत्मा एवं सत्त्व को आपस में मिलाकर आनंद की प्राप्ति होती है। यह क्रिया एक दूसरे से जुड़ी होती है। संयम पुरुष को ज्ञान देता है।

I № 36

ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥ ३ ॥३६ ॥

√Fkz %

स्रवण, त्वचा, देखना, स्वाद एवं गंध का ज्ञान प्रतिकर से आता है।

I № 37

ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः ॥ ३ ॥३७ ॥

√Fkz %

समाधि में अनेक व्यवधान होते हैं, यह सभी शक्तियां जगत के पटल पर नजर आती हैं।

I № 38

बन्धकारणशैथिल्यात्प्रचारसंवेदनाच्च चित्तस्य परशरीरावेशः ॥ ३ ॥३८ ॥

√Fkz %

योगी जब सभी बंधकों से मुक्त हो जाता है तब प्रभाव उनके अंगों पर किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में भी प्रवेश करता है।



टिप्पणी



टिप्पणी

पतंजलि योग सूत्र के विभूति पद और कैवल्य पद का स्मृतिकरण

I № 39

उदानजयाज्जलपघकण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥ ३ ॥३९ ॥

√Fkz %

उडने को नियंत्रित कर योगी पानी, दलदल व कांटों के मध्य नहीं फंसता है।

I № 40

समानजयाज्ज्वलनम् ॥ ३ ॥४० ॥

√Fkz %

समान को नियंत्रित करने के पश्चात् योगी के चहुं ओर एक हवा का संचार होता है।

I № 41

श्रोत्राकाशयोः सम्बन्धसंयमाद्दिव्यं श्रोत्रम् ॥ ३ ॥४१ ॥

√Fkz %

भाव एवं ..... के मध्य संयम स्थापित करने से आप दिव्य श्रवण कर सकते हैं।

I № 42

कायाकाशयोः सम्बन्धसंयमाङ्घ्रुतूल- समापत्तेश्चाकाशगमनम् ॥ ३ ॥४२ ॥

√Fkz %

अक्स एवं शरीर के मध्य संयमित संबंध करने से योगी रूई सा हल्का होकर आसमान में उड़ सकता है।

I ॥ 43

बहिरकल्पिता वृत्तिर्महाविदेहा ततः प्रकाशावरणक्षयः ॥ ३ ॥४३ ॥

√Fkz %

मस्तिष्क के वास्तविक परिवर्तन होने से संयम रखना आसान हो जाता है। यह शरीर विहिन होकर आपको आंतरिक रोशनी की ओर अग्रसर करता है।

I ॥ 44

स्थूलस्वरूपसूक्ष्मान्वयार्थवत्त्वसंयमाद्भूतजयः ॥ ३ ॥४४ ॥

√Fkz %

विभिन्न तत्वों पर संयम रखने से आप उन्हें नियंत्रित करके विजय प्राप्त कर सकते हैं।

I ॥ 45

ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसम्पत्तद्धर्मानभिघातश्च ॥ ३ ॥४५ ॥

√Fkz %

शरीर में सजीवता आती है। शरीर अच्छी भावना के साथ अपने गुणों को पुनः प्राप्त करता है।



टिप्पणी



I № 46

रूपलावण्यबलवज्रसंहननत्वानि कायसम्पत् ॥ ३ ॥४६ ॥

√Fkz %

शरीर की छवि बढ़ाने वाले तत्व हैं सुंदरता, रंगरूप, ताकत व शक्ति ।

I № 47

ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमादिन्द्रियजयः ॥ ३ ॥४७ ॥

√Fkz %

वस्तु, ज्ञान एवं अंह पर संयम रखने से आप विभिन्न अंगों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं ।

I № 48

ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च ॥ ३ ॥४८ ॥

√Fkz %

इससे मस्तिष्क स्वच्छ होता है । शरीर स्वतंत्र होकर, आप प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठा सकते हैं ।

I № 49

सत्त्वपुरुषान्यतारव्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वंसर्वज्ञातृत्वं च ॥ ३ ॥४९ ॥

√Fkz %

संयम एवं सत्व से तात्पर्य है बुद्धि की उपस्थिति एवं पोरुष का हर स्थान पर उपस्थिति होना।



टिप्पणी

I № 50

तद्वैराग्यादपि दोषबीजक्षये कैवल्यम् ॥ ३ ॥५० ॥

√Fkz %

हर बीज नष्ट होकर बुराई को समाप्त करता है। वह कैवल्य प्राप्त करता है।

I № 51

स्थान्युपनिमन्त्रणे सङ्गस्मयाकरणं पुनरनिष्टप्रसङ्गात् ॥ ३ ॥५१ ॥

√Fkz %

योगी को किसी प्रकार के लोभ में नहीं आना चाहिए। इससे आप बुराई से भी बच सकते हैं।

I № 52

क्षणतत्क्रमयोः संयमाद्विवेकजं ज्ञानम् ॥ ३ ॥५२ ॥

√Fkz %

संयम रखने से आप समय व अपने आने वाले परिवर्तनों में अंतर ..... सकते हैं।



I № 53

जातिलक्षणदेशैरन्यतानवच्छेदात् तुल्ययोस्ततः प्रतिपत्तिः ॥ ३ ॥५३ ॥

√Fkz %

जिन्हें जाति, चिन्ह व स्थान के आधार पर परिवर्तित नहीं किया जा सकता, वह संयम के आधार पर विभेदित होते हैं।

I № 54

तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयम् अक्रमंचेति विवेकजं ज्ञानम् ॥ ३ ॥५४ ॥

√Fkz %

ज्ञान को प्राप्त कर आप सभी वस्तुओं में विभेद करने की शक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

I № 55

सत्त्वपुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति ॥ ३ ॥५५ ॥

√Fkz %

शुद्धि की समानता से आप सत्व एवं पौरुष से कैवल्य बना सकते हैं।

॥ इति पतञ्जलि-विरचिते योग-सूत्रे तृतीयो विभूति-पादः ॥

√Fkz %

यहां पर पतंजलि रचित योगसूत्र का ..... भाग विभूति पद समाप्त होता है।



? क्या आप जानते हैं

महर्षि पतंजलि एक महान संत थे। इन्होंने 195 योगसूत्र एकत्रित किए। यह कार्य उन्होंने उत्तराखंड के एक पहाडी जिले, रूद्र प्रयाग में 1700 वर्ष पूर्व किया था। महर्षि पतंजलि को आदि शेष का अवतार माना जाता है। आदि शेष वह सर्प है जिस पर भगवान विष्णु विराजमान हैं।



उनका संग्रह, योगसूत्र योग की एक सार्वभौमिक पुस्तक है जो पूरी विश्व में योग के अध्ययन करने में उपयोग किया जाता है। इसके 4 अध्याय हैं, जो हैं—

1. समाधि पद
2. साधना पद
3. विभूति पद
4. कैवल्य पद

इन योगसूत्र को राजयोग भी कहा जाता है। पतंजलि ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। वह प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति, आयुर्वेद के भी लेखक माने जाते हैं।



टिप्पणी



टिप्पणी



### पाठगत प्रश्न 9.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. योगसूत्र के लेखक ..... है।
2. ज्ञान के अविरल प्रवाह को ..... कहते हैं। (सूत्र 3.2)
3. परिवर्तनों के कारण विभिन्न ..... होते हैं। (सूत्र 3.15)
4. शरीर को स्वस्थ रखने हेतु ..... और ..... प्रयुक्त होते हैं। (सूत्र 3.46)

### 9.2 कैवल्य पद

॥ चतुर्थोऽध्यायः ॥ ॥ कैवल्य-पादः ॥

I № 1

जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः ॥ ४ ॥१ ॥

vFkz %

सिद्धियों की प्राप्ति जन्म से होती है। यह शब्दों की ( ) नहीं एवं एकाग्रता पर आधारित होती है।

I № 2

जात्यन्तरपरिणामः प्रकघत्यापूरात् ॥ ४ ॥२ ॥

vFkz %

प्रकृति में रहने हेतु एक जाति का दूसरे में परिवर्तन आवश्यक है।



I ॥ 3

निमित्तमप्रयोजकं प्रकघतीनां वरणभेदस्तु ततः क्षेत्रिकवत् ॥ ४ ॥३ ॥

√FKZ %

अच्छे कर्म परिवर्तनों के लिए प्रतयक्ष रूप से जिम्मेदार नहीं होते हैं। यह व्यवधान विशेष रूप से जीवन में अग्रसर करते हैं। यह ठीक इसी प्रकार कार्य करती है जिस प्रकार कोई कृषक पानी से जमीन सींचता है। यही प्रकृति का सार है।

I ॥ 4

निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रात् ॥ ४ ॥४ ॥

√FKZ %

अहंकार से ही मस्तिष्क में समस्या रहती है।

I ॥ 5

प्रवृत्तिभेदे प्रयोजकं चित्तमेकमनेकेषाम् ॥ ४ ॥५ ॥

√FKZ %

रचनात्मक मस्तिष्क विभिन्न क्रियाओं से बनता है। मौलिक मस्तिष्क इसको नियंत्रित करता है।



I № 6

तत्र ध्यानजमनाशयम् ॥ ४ ॥६ ॥

√Fkz %

समस्त चित्त में समाधि को इच्छाहीन एवं सर्वोच्चय बताया गया है।

I № 7

कर्माशुाकघष्णं योगिनस्त्रिविधमितरेषाम् ॥ ४ ॥७ ॥

√Fkz %

योगियों के लिए शब्द काले-सफेद या अच्छे बुरे नहीं होते हैं बल्कि तीन प्रकार के होते हैं काले, सफेद या दोनों का मिश्रण।

I № 8

ततस्तद्विपाकानुगुणानामेवाभिव्यक्तिर्वासनानाम् ॥ ४ ॥८ ॥

√Fkz %

इन तृतीय कार्यो में आपकी इच्छा स्थिति व शाक्ति नियंत्रित हो जाती है। यह कुछ समय के लिए आपको ध्यान की सर्वोच्च स्थिति में ले जाती है।

I № 9

जातिदेशकालव्यवहितानामप्यानन्तर्यं स्मृतिसंस्कारयोरेकरूपत्वात् ॥ ४ ॥९ ॥

√Fkz %

यह इच्छा शक्ति से आपको जोडती है। यह जाति, स्थान एवं समय में अलग

किया जाता है। यह बुद्धि एवं प्रभाव का मापन करती है।

I ॥ 10

तासामनादित्वं चाशिषो नित्यत्वात् ॥ ४ ॥१० ॥

√Fkz %

यह अध्यात्मिक खुशी व इच्छाओं को प्राप्ति है।

I ॥ 11

हेतुफलाश्रयालम्बनैः संगृहीतत्वादेशामभावे तदभावः ॥ ४ ॥११ ॥

√Fkz %

यह कारण, प्रभाव, सहायता या विषय वस्तु के आभाव में एक जुट होते हैं।

I ॥ 12

अतीतानागतं स्वरूपतोऽस्त्यध्वभेदाद्धर्माणाम् ॥ ४ ॥१२ ॥

√Fkz %

प्रकृति में भूत व भविष्य दोनों शामिल होते हैं इनके अपने गुण होते हैं।

I ॥ 13

ते व्यक्तसूक्ष्मा गुणात्मानः ॥ ४ ॥१३ ॥

√Fkz %

गुणों की प्रवृत्ति व्यक्ति के विषय वस्तु में पाए जाते हैं।



टिप्पणी



I № 14

परिणामैकत्वाद्द्वस्तुतत्त्वम् ॥ ४ ॥१४ ॥

√FkZ %

परिवर्तनों की एक प्रवृत्ति होने से अनेक परिवर्तन होते हैं। यह तीन तत्व एक दूसरे के साथ सामंजस्य से जुड़कर एकता प्रदर्शित करते हैं।

I № 15

वस्तुसाम्ये चित्तभेदात्तयोर्विभक्तः पन्थाः ॥ ४ ॥१५ ॥

√FkZ %

समान वस्तु, प्रत्युत्तीकरण एवं इच्छा मस्तिष्क पर निर्भर करता है।

I № 16

न चैकचित्ततन्त्रं वस्तु तदप्रमाणकं तदा किं स्यात् ॥ ४ ॥१६ ॥

√FkZ %

प्रत्यक्षीकरण चित्त पर निर्भर नहीं होती है। यदि संज्ञानात्मक शक्ति विकसित नहीं होगी तो प्रत्यक्षीकरण किस प्रकार संभव होगा।

I № 17

तदुपरागापेक्षित्वाच्चित्तस्य वस्तु ज्ञाताज्ञातम् ॥ ४ ॥१७ ॥

√FkZ %

मस्तिष्क को कुछ वस्तुओं का ज्ञान होता है तथा कुछ वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता है। इसका प्रत्यक्षीकरण केवल मस्तिष्क पर आधारित होती है।

I № 18

सदा ज्ञाताश्चित्तवृत्तयस्तत्प्रभोः पुरुषस्यापरिणामित्वात् ॥ ४ ॥१८ ॥

√FkZ %

मस्तिष्क का स्तर हमेशा ज्ञात होता है। मस्तिष्क अपरिवर्तनशील है।

I № 19

न तत्स्वाभासं दृश्यत्वात् ॥ ४ ॥१९ ॥

√FkZ %

मस्तिष्क में ऊर्जा स्वयं से नहीं आती है। मस्तिष्क को वस्तु की भांति रखा जाता है।

I № 20

एकसमये चोभयानवधारणम् ॥ ४ ॥२० ॥

√FkZ %

दो अज्ञान वस्तुओं को एक ही समय पर प्रत्यक्षीकृत किया जा सकता है।

I № 21

चित्तान्तरदृश्ये बुद्धिबुद्धेरतिप्रसङ्गः स्मृतिसंघरश्च ॥ ४ ॥२१ ॥

√FkZ %

संज्ञानात्मक शक्ति के कारण आपके मामले एवं मस्तिष्क में किसी प्रकार की समस्या नहीं होती है।



टिप्पणी



I № 22

चित्तेरप्रतिसंक्रमायास्तदाकारापत्तौ स्वबुद्धिसंवेदनम् ॥ ४ ॥२२ ॥

√Fkz %

ज्ञार का पौरुष से संबंध है। यह परिवर्तन नहीं करता है। मस्तिष्क का अपने स्वरूप होता है। मस्तिष्क जागृत होता है।

I № 23

द्रष्टृदृश्योपरक्तं चित्तं सर्वार्थम् ॥ ४ ॥२३ ॥

√Fkz %

देखने वाले योगी पर मस्तिष्क का प्रभाव होता है। यह उसे वस्तुओं का प्रत्यनीकरण करने में सहायता देता है।

I № 24

तदसंख्येयवासनाभिश्चित्रमपि परार्थं संहत्यकारित्वात् ॥ ४ ॥२४ ॥

√Fkz %

मस्तिष्क द्वारा अनेक इच्छाओं में परिवर्तन होता है। यह पौरुष पर भी अपना ध्यान देता है।

I № 25

विशेषदर्शिन आत्मभावभावनाविनिवृत्तिः ॥ ४ ॥२५ ॥

√Fkz %

मस्तिष्क के परिवर्तनों में विभेद कर के आत्मा को रोकता है।



I № 26

तदा विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं चित्तम् ॥ ४ ॥२६ ॥

√FKZ

( ) के परिवर्तनों के कारण मनुष्य कैवल्य भाव ग्रहण करता है।

I № 27

तच्छिद्रेषु प्रत्ययान्तराणि संस्कारेभ्यः ॥ ४ ॥२७ ॥

√FKZ %

प्रभावों से विचार उत्पन्न होते हैं जो व्यवधान उत्पन्न करते हैं।

I № 28

हानमेषो शवदुक्तम् ॥ ४ ॥२८ ॥

√FKZ %

अज्ञानता ही विनाश की कुंजी है। यही बात पहले भी बतायी गयी है।

I № 29

प्रसंख्यानेऽप्यकुसीदस्य सर्वथा विवेकख्यातेर्धर्ममेघः समाधिः ॥ ४ ॥२९ ॥

√FKZ %

सही प्रकार के ज्ञान में विभेद करके हम उनके फल प्राप्त कर सकते हैं। यह विभेद ही समाधि व उसके गुणों को प्रतिलक्षित करते हैं।



टिप्पणी



I № 30

ततः शकर्मनिवृत्तिः ॥ ४ ॥३० ॥

√Fkz %

दर्द प्राप्त होने से अज्ञानता समाप्त होती है।

I № 31

तदा सर्वावरणमलापेतस्य ज्ञानस्यानन्त्याज्ज्ञेयमल्पम् ॥ ४ ॥३१ ॥

√Fkz %

सभी प्रकार का ज्ञान अशुद्धता को समाप्त करता है। इससे ज्ञान की सूक्ष्मता का आभाव होता है।

I № 32

ततः कघतार्थानां परिणामक्रमसमाप्तिर्गुणानाम् ॥ ४ ॥३२ ॥

√Fkz %

यह अनेक परिवर्तनों के पश्चात् गुणों की प्राप्ति करने में अपना योगदान होता है।

I № 33

क्षणप्रतियोगी परिणामापरान्तनिर्ग्राह्यः क्रमः ॥ ४ ॥३३ ॥

√Fkz %

क्षणिक परिवर्तनों को दूसरे छोर पर महसूस करना ही परिणाम है।

I № 34

पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यंस्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति ॥

४ ॥३४ ॥

√FKZ %

गुणों के आधार पर कार्य एवं पौरुष की गणना होती है। इस स्थिति को ही कैवल्य कहा जाता है। यह ज्ञान की शक्ति की अपनी प्रकृति में स्थापना है।

॥ इति पतञ्जलि-विरचिते योग-सूत्रे चतुर्थः कैवल्य-पादः ॥

इस प्रकार पतंजलि शक्ति योगसूत्र का चतुर्थ पद कैवल्य पद समाप्त हुआ।

॥ इति श्री पातञ्जल-योग-सूत्राणि ॥

इस प्रकार पतंजलि योगसूत्र समाप्त हुआ।



### पाठगत प्रश्न 9.2

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :
  - i. किसी अन्य जाति या प्रजाति में परिवर्तन से मस्तिष्क में ..... का असर है। (सूत्र 4.2)
  - ii. मस्तिष्क किसी वस्तु का ..... नहीं है। (सूत्र 4.19)
  - iii. .... और ..... से अज्ञानता को रोका जा सकता है। (सूत्र 4.30)



### आपने क्या सीखा

प्रस्तुत पाठ में हमने विभूति पद के 55 और कैवल्य पद के 34 सूत्रों का



टिप्पणी



## पतंजलि योग सूत्र के विभूति पद और कैवल्य पद का स्मृतिकरण

व्याख्या के साथ अध्ययन किया है।

विभूति पद हमें योग अभ्यास के लाभ एवं महत्व बतलाता है।

कैवल्य पद दर्द एवं परेशानियों से मुक्ति का माध्यम बताता है। यही योग के नियमित अभ्यास का परिणाम है।



### पाठांत प्रश्न

1. योगसूत्र की रचना किसने की है?
2. पतंजलि योगसूत्र में कितने सूत्र हैं?
3. पतंजलि योगसूत्र में कितने अध्याय हैं? सभी अध्यायों का नाम लिखिए।
4. सूत्र से आप क्या समझते हैं?



### उत्तरमाला

#### 9-1

1. i. ऋषि पतंजलि  
ii. ध्यान  
iii. उत्पत्ति  
iv. सुदरता, रंग रूप, ताकत एवं शक्ति

#### 9-2

1. i. प्रवृत्ति  
ii. दर्द एवं कार्य  
iii. आत्म-ऊर्जा